IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

परिवार के बदलते स्वरूप में वृद्धजनों की उपेक्षा : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

शोध–निर्देशक
डॉ. हितेन्द्र सिंह राठौड़
विभागाध्यक्ष, समाजशास्त्र
वनस्थली विद्यापीठ

शोधार्थी
गुंजन राठौर
वनस्थली विद्यापीठ

सारांश –

वर्तमान समय में वैज्ञानिकता तथा भौतिकता की अंधी दौड़ में प्राचीन मान्यताएँ एवं परम्परागत मूल्यों में परिवर्तन व संयुक्त परिवार का विघटन तेजी से हुआ है। परिस्थितियों के अनुसार ज्यादातर एकल परिवारों ने जगह बना ली है। जो रिश्ते पहले प्यार, विश्वास और अपनत्व पर टिके रहते थे। अब वे औपचारिकता की बुनियाद पर टिके हुये नजर आ रहे हैं। जहां संबंधों के संदर्भ ही बदल रहे हैं। संयुक्त परिवार के विघटन का सर्वाधिक खामियाना वृद्धजनों को उठाना पड़ रहा है। जीवन के अंतिम छोर पर जहां इन्हें पारिवारिक स्नेह और सेवाटहल की सर्वाधिक आवश्यकता होती है, वहां वृद्धजनों के प्रति दिनोंदिन बढ़ता उपेक्षा का भाव इनकी पीड़ा में रोज–ब–रोज इजाफा ही हुआ है तथा होता जा रहा है। एकल परिवारों के अस्तित्व में आने तथा परिवार का दायरा पति–पत्नी व बच्चों तक सीमित हो जाने के कारण वृद्ध समाज पारिवारिक परिदृश्य से ओझिल होते जा रहे हैं। आज नवीन परिवार की आधारशिला में कुछ ऐसी विशेषताओं (कारकों) का इजाफा हुआ है। जो वृद्धजनों की उपेक्षा को प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से बढ़ावा देकर वृद्धावस्था को कमजोर व उपेक्षित बनाकर समाज में एक समस्या के रूप में पेश कर रहे हैं। प्रस्तुत अनुसंधान प्रपत्र वृद्धजनों की उपेक्षा पर केन्द्रित है।

संकेत शब्द – वृद्धजन, उपेक्षा, जम्मेदार कारक।

परिचय –

भारतीय समाज में व्यक्ति जीवन को सुचारू रूप से संचालित करने के लिये जीवनकाल को 100 वर्ष का मानकर उसे चार आश्रम व्यवस्था (क्रमशः ब्रह्मचर्याश्रम, गृहस्थाश्रम, वानप्रस्थाश्रम व सन्यासाश्रम)। वानप्रस्थ व सन्यासाश्रम मूल रूप से वृद्धावस्था जीवन–शैली से संबंधित है। जिसमें व्यक्ति अपने संचित अनुभवों से समाज को अवगत कराता है। वृद्धजनों के प्रति श्रृद्धापूर्वक व्यवहार परम्परागत समाज की मूल्य व्यवस्था का भाग रहा है।

इतिहास इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि प्राचीन काल में वृद्धजनों की स्थिति अत्यंत उन्नत एवं सम्माननीय रही है। उन्हें समाज एवं परिवार में अलग वर्चस्व था। परिवार की समस्त बागडोर उनके हाथों में हुआ करती थी। उन्हीं की सत्ता एवं प्रभाव के कारण पहले संयुक्त परिवार हुआ करते थे। वे परिवार के सदस्यों को एक धागे में बांधे रखते।

भारतीय संस्कृति में वृद्धजन हमेशा से ही पूज्यनीय रहे हैं। भारतीय सामाजिक मानदण्ड और मूल्य वृद्धजनों का ध्यान रखने व उनके सम्मान करने पर जोर डालते रहे हैं। परंतु भौतिकवादी युग में वृद्धजनों की समस्याओं का बढ़ना एवं समाज में उनकी उपयोगिता कम और समस्याएं बढ़ती नजर आ रही है। विभिन्न पारिवारिक एवं सामाजिक मूल्यों जैसे – वृद्धजनों का सम्मान करना, उन्हें अपना पथ–प्रदर्शन समझना, दीन व असहायों की सेवा व देखभाल करना आज के समय में बदलते जा रहे हैं। मूल्य जो व्यक्ति को कार्य व व्यवहार करने को संकेत देते रहे हैं। वह आज उसकी स्वार्थों की पूर्ति व व्यक्तिवादिता की अंधी दौड़ की आँधी में धूमिल हो चुके हैं।

बढ़ती हुई मँहगाई, औद्योगिकरण, नगरीकरण, व्यक्तिवादी सोच से व्यक्ति के अंदर से परम्परागत सामाजिक मूल्य जैसे – त्याग, प्रेम, स्नेह, परोपकार, सहानुभूति, सहनशीलता इत्यादि को विलुप्त कर दिया है। फलतः परिवार का असहयोगात्मक रूख एवं समाज का विपरीत दृष्टिकोण कुण्ठा को जन्म देता है। जिससे वृद्धजन आज परिवार व समाज द्वारा उपेक्षित होने लगे हैं तथा परिवार में उनका महत्व भी नकार दिया जाने लगा है। आज वृद्धजन टूटते संयुक्त परिवर के साथ एकल परिवार की परिधि से भी बाहर होते नजर आ रहे हैं। नवीन सामाजिक–पारिवारिक परिस्थितियों में पुरानी मान्यताओं एवं वृद्धजनों का महत्व धूमिल होता जा रहा है और वृद्धजन उपेक्षित भाव से परिवार के लिये बोझ एवं समस्या बनते जा रहे हैं।

अध्ययन प्रविधि –

प्रस्तुत अध्ययन **''परिवार के बदलते स्वरूप में वृद्धजनों की उपेक्षा : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन''** पर केंद्रित है। अध्ययन का उद्देश्य वृद्धजनों की उपेक्षा को जानना है। अध्ययन का क्षेत्र उत्तर प्रदेश का बदायूँ जिला है। प्रस्तुत अध्ययन के लिए 150 वृद्धजनों को उद्देश्यपूर्ण निदर्शन द्वारा निदर्शन के रूप में शामिल किया गया है। प्राथमिक तथ्यों का संकलन साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से किया गया है। तथ्यों का विश्लेषण वर्णनात्मक के साथ ही अन्य निष्कर्षों के संदर्भ में किया गया है।

परिवार के बदलते स्वरूप मं वृद्धजनों की उपेक्षा के कारणों के आधार पर

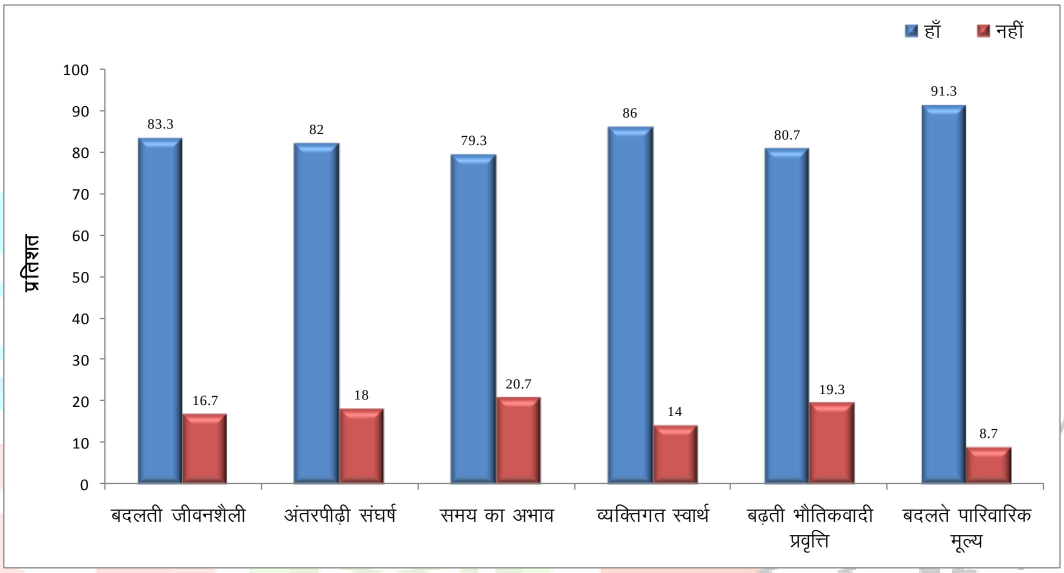

उपयुक्त आरेख से यह स्पष्ट होता है कि अधिकांश वृद्धजन ने बताया कि बदलती जीवनशैली से न केवल नवीन पीढ़ी के रहन–सहन, खान–पान, वेश–भूषा में परिवर्तन आया है बल्कि व्यवहार–प्रतिमान का स्वरूप भी बदला हुआ नजर आने लगा है। अब परिवार के सदस्यों का वृद्धजनों के प्रति सेवा–सुश्रुषा, प्रेमभाव जैसी भावनाओं का विलोपन आधुनिक नवीन विचारों के समक्ष कमजोर होती जा रही है। आज नवीन पीढ़ी को बदलती जीवनशैली इतनी रास आने लगी है कि वह अपने वृद्धजनों को संरक्षण व सम्मान देने संबंधी पारिवारिक दायित्व अनावश्यक व बोझ प्रतीत होने लगे हैं।

अधिकांश वृद्धजन ने बताया कि परस्पर वैचारिक असमानता से उत्पन्न मतभेद के कारण नवीन पीढ़ी वृद्धजनों के विचारों व विश्वासों को तर्क–वितर्क के आधार पर आंकने लगे हैं। जिससे दो पीढ़ियों में परस्पर अपने–अपन विचारों, विश्वासों को लेकर मनमुटाव उत्पन्न होने लगा है। जहां नवीन पीढ़ी वृद्धजनों व उनके विचारों को पूर्णतया अनुपयोगी, बेकार मानकर उपेक्षित कर पीछे नहीं हट रही है।

अधिकांश वृद्धजन ने बताया बदलती जीवनशैली के साथ व्यस्त दिनचर्या से आज वृद्धजन परिवार में उपक्षा का दंश झेलने को विवश है। जहां वह स्वयं को अकेला व असहाय महसूस कर रहे हैं, क्योंकि भरा–पूरा परिवार होने के बावजूद कोई भी उनके साथ समय व्यतीत करने व उचित पारिवारिक देखभाल करने को तत्पर नहीं है। जिससे परिवार में उनका उपयुक्त स्थान व परिवार के सदस्यों में उनके प्रति दृष्टिकोण शून्य नजर आने लगा है।

अधिकांश वृद्धजन ने बताया कि परिवार के बदलते स्वरूप के बीच संकीर्ण पारिवारिक संबंधों में व्यक्तिवादिता की हावी होती भावना के साथ वृद्धजनों के प्रति उपेक्षा उन्हें पारिवारिक समर्थन व सहयोग से दूर करती जा रही है। आज परिवार की नवीन पीढ़ी अपने जीवन को सुख–सुविधायुक्त व आरामदायक बनाने में तत्पर है किंतु वृद्धजनों के प्रति अपने दायित्वों को नजरअंदाज कर उनके प्रति संकुचित मर्यादा वृद्धजनों को समझने व उनकी जीवन की अपेक्षाओं को पूरा न कर उनसे दूर होते नजर आने लगे है।

अधिकांश वृद्धजन ने बताया कि विलासितपूर्ण जीवन की चाह में नवीन पीढ़ी वृद्धजनों के साथ अनैतिकता से पेश आने से भी नहीं हिचकती है। वह भूलते जा रहे हैं कि जिन माता–पिता ने उनके जीवन को आरामदायक बनाने, इच्छाओं को पूर्ण करने के लिये स्वयं को सुख–सुविधा से दूर रखा, आज वहीं संतान अपनी सुख–सुविधा की पूर्ति के लिये वृद्धजनों को दूर करने लगी है।

अधिकांश वृद्धजन ने बताया कि बदलती पारिवारिक संरचना के साथ बदलते व नवीन पारिवारिक मूल्य में वृद्धजन के संरक्षण व उनकी अपेक्षाओं पूर्ति को लेकर नवीन पीढ़ी में परस्पर द्वेषभाव उत्पन्न कर दिया है। जिससे वृद्धजनों का कटुतापूर्ण संबंधों व असंतोष की भावना के साथ न केवल उत्पीड़न का शिकार होना पड़ रहा है। बल्कि पारिवारिक अलगाव, असंरक्षण के साथ भावात्मक उपेक्षा व सहयोग की कमी का भी सामना करना पड़ रहा है।

निष्कर्ष –

अध्ययन के अनुसार यह ज्ञात होता है कि आज परिवार के बदलते स्वरूप में बदलती जीवनशैली, अंतरपीढ़ी संघर्ष, समय का अभाव, व्यक्तिगत स्वार्थ, बढ़ती भौतिकवादी प्रवृत्ति, बदलते पारिवारिक मूल्य जैसे – कारकों से वृद्धजनों के प्रति उपेक्षा का भाव दिनोंदिन बढ़ता जा रहा है।

- बदलते पारिवारिक मूल्य से आज वृद्धजनों के प्रति आदर व सम्मान का भाव उपेक्षा में परिवर्तित होता जा रहा है।

- व्यक्तिवादिता की बढ़ती प्रवृत्ति ने परिवार की सामूहिकता को खत्म कर वृद्धजनों के प्रति पारिवारिक सहयोग को कमजोर किया है।
- बदलती जीवनशैली व समय की व्यस्तता के बीच वृद्धजन अकेला, असहाय व नीरसता के साथ जीवन व्यतीत करने को विवश है।
- अंतरपीढ़ी संघर्ष से उत्पन्न वैचारिक असमानता व मतभेदता ने वृद्धजनों के पारिवारिक एवं आत्मीय संबंधों में टकराव पैदा कर दिया है।

इस प्रकार अध्ययन से ज्ञात होता है कि वृद्धजन बदलते पारिवारिक–सामाजिक परिवेश में अनेक विषम परिस्थितियों के बीच उपेक्षित व निरर्थक दिखाई पड़ रहे हैं।

संदर्भ सूची –

1. ब्रह्मवर्चस् – सार्थक एवं आनंदमय वृद्धावस्था, युग निर्माण योजना गायत्री तपोभूमि, मथुरा, 2003, पृ. सं. – 17–18
2. उमेश कुमार दीक्षित – वृद्धाश्रम एवं उनके निवासियों का समाजशास्त्रीय विश्लेषणात्मक अध्ययन ''सेवा सदन, प्रमोदन, चित्रकूट'' के विशेष संदर्भ में, Kaav International Journal ofArts, Humanities & Social Sciences, Vol. 4, 2017, Page No. 5-8